

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज - एक महान पर्यावरणविद और पारिस्थितिक वैज्ञानिक

डा० सुमन बाला

पूर्व शोधार्थी-गुरु जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान,
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार (हरि)

डा० नवीन कुमार

पूर्व शोध-छात्र, शिक्षा विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

गुरु जाम्भोजी एक महान पर्यावरण विद और पारिस्थितिक वैज्ञानिक के साथ समाज सुधारक, दार्शनिक, क्रांतिकारी व भक्ति आन्दोलन के प्रणेता थे। उनके सिद्धांत, दार्शनिक मान्यताएं और सामाजिक दृष्टिकोण में एक समन्वय एवं सामंजस्य है। उनके नियम प्रकृति के सिद्धांतों पर आधारित हैं। जाम्भोजी की शिक्षाओं का आज के वैज्ञानिकों पर भी प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने अहिंसा एवं दया के सिद्धान्त व पर्यावरण के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया। इन्होंने अपनी शब्दवाणी में जीव रक्षा, पर्यावरण रक्षा को प्रमुख सिद्धांत मानकर पर्यावरण की प्रबंधकीय व्यवस्था का विवरण अपनी स्वानुभूतियों के माध्यम से प्रकट किया है। बिश्नोईयों द्वारा धर्म में मुर्दे को गाड़ना, विवाह के समय मुहूर्त नहीं निकालना आदि सिद्धान्त ग्रहण किये हैं। उनकी शिक्षाओं पर वैष्णव सम्प्रदाय, कबीर व नानकपंथ का भी बड़ा प्रभाव है। वे पर्यावरण के सच्चे साधक, परोपकारी महात्मा तथा अवतारी पुरुष थे। वे पर्यावरण के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति, समग्र विश्व और प्राणीमात्र के परम रक्षक थे।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज मध्यकालीन भक्ति धारा के महान पुरुष थे। इसके साथ-साथ वे महान चिंतक दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाज सुधारक, विश्व के महान पर्यावरण विद व लोक चेतक थे। गुरु जम्भेश्वर जी ने 29 नियमों की आचार संहिता का प्रतिपादन किया। उनके ये नियम अत्यंत वैज्ञानिक व व्यावहारिक हैं जो प्राणी मात्र लिये अत्यंत कल्याणकारी व उपयोगी हैं। गुरु जाम्भोजी ने लोगों को अपना गुरुत्व ज्ञान प्रदान करते हुए पर्यावरण सुरक्षा व प्राणीमात्र की सुरक्षा का संदेश दिया। उन्होंने 29 नियमों की आचार संहिता में दो नियम प्राकृतिक संतुलन हेतु दिये।

1. जीव दया पालनी।
2. रुख लीलो नहीं धाणे।

हालांकि उस समय पर्यावरण प्रदूषण की घोर समस्या नहीं थी। उन्होंने तभी भाँप लिया था की मानव मात्र के लिये पर्यावरण कितना उपयोगी है।

पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति परि + आवरण दो शब्दों के योग से हुई है। परि का अर्थ है चारों तरफ व आवरण का अर्थ है चारों तरफ से ढका हुआ। आवरण शब्द 'आ' उपसर्ग 'वृ' धातु व लयुट प्रत्यय से हुई है। अंग्रेजी में पर्यावरण को environment कहते हैं। यह शब्द भी दो शब्दों के मेल से बना है। Environ+ment। Environ का अर्थ है घेरना और ment का अर्थ है चारों ओर से। हमारे चारों ओर का वह वातावरण जो हम सब जीवधारियों को प्रभावित करता है वह पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण के अन्तर्गत पृथ्वी, वायु, जल, आकाश, प्रकाश, पशु-पक्षी, वनस्पति आदि सभी जैविक तथा अजैविक घटकों का समावेश है इसलिए पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये प्रकृति और मानव के बीच पारस्परिक संतुलन अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार प्रकृति मानव मात्र की

आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये क्षण प्रति क्षण तत्पर रहती हैं उसी प्रकार प्राणी का भी कर्तव्य है कि उसकी रक्षा करे। शुद्ध वायु, जल, पृथ्वी, पेड़, पौधे आदि के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हजारों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों- मुनियों ने इस सत्य को समझा और प्रकृति की शक्तियों एवं तत्वों की देवताओं के रूप में मंत्रों द्वारा स्तुति की और पर्यावरण शुद्धि के लिये यज्ञ संस्था का निर्माण भी किया।

पर्यावरण के अन्तर्गत वह सब समाविष्ट है जो पृथ्वी पर अदृश्य एवं दृश्य रूप में विद्यमान है परंतु मानवीय क्रिया - कलापों के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। मानव विकास के नाम पर दिन प्रतिदिन प्रकृति का विनाश कर्म रहा है। अंधा धुंध औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप प्रकृति के विभिन्न आयामों में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है जिससे आकाश, पृथ्वी, जल, वायु आदि सभी प्रदूषित हो रहे हैं। मानव और प्रकृति का आपस में घनिष्ठ संबंध है। प्रकृति को मानव की सहचरी बताया गया है। पर्यावरण के भौतिक घटकों को मानव जीवन का आधार बताया गया है और कहा गया है

"शती, जल, पवन, गगन समीरा पंच तत्व से रचत शरीरा"।

अर्थात् भूमि, जल, आकाश, अग्नि और वायु आदि पाँच तत्वों से प्रत्येक प्राणी के शरीर की रचना हुई है और ये पाँचों ही तत्व मनुष्य के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं।

गुरु जम्भेश्वर जी को प्रकृति से बहुत प्रेम था इसलिए इन्होंने अपनी तपस्या स्थल कंकड़ी के पेड़ों के बीच बनाया

"हरि ककहड़ी मंडप मैडी, तांहा हुमारावासा।

वारी चक्र नवदीप थर हरै, जे आपौ परगासा-3

मानव प्रकृति के तीन प्रमुख घटक मानव, वनस्पति एवं जीव- जन्तु। इन सब में मानव ही चिंतनशील, बुद्धिमान एवं सामर्थ्यवान है। अन्य दोनों घटकों का आस्तित्व मानव पर निर्भर करता है। मानव स्वयं तभी सुरक्षित है जब वनस्पति एवं जीव-जन्तु सुरक्षित हों और इसी तथ्यों को समझने वाले गुरु जाम्भोजी ने अपने शिष्यों, अनुयायियों को पर्यावरण सुरक्षा का मूल मंत्र सिखाया। पर्यावरण संरक्षण संबंधी यह मंत्र सैद्धांतिक नहीं, अपितु व्यावहारिक है। पर्यावरण संरक्षण तथा जीव दया के नियम की पालना करते हुए सैकड़ों अनुयायियों ने अपने प्राणों की आहुति दी।

1730 में खेजडली बलिदान की घटना भी खेजडली बलिदान की घटना भी खेजडली वृक्षों की सुरक्षा के लिये 363 स्त्री पुरुषों के बलिदान से संबन्धित है। जिसमें प्रथम स्त्री अमृता देवी ने खेजडी वृक्ष की रक्षा हेतु अपनी जान दे दी। इस घटना पर 'खेजडी की बेटी' 'महाबलिदान' नाटकों का सफलतापूर्वक मंचन किया जा चुका है और आगे भी किया जाएगा।

बिश्नोई धर्म में 29 धर्म नियमों की आचार संहिता में आंतरिक और बाह्य पर्यावरण दोनों को शुद्ध करने की बात की गई है। यदि मनुष्य के विचार आंतरिक रूप से शुद्ध पवित्र रहेंगे तो बाह्य पर्यावरण अपने आप शुद्ध रहेगा। जैसा जम्भवाणी में मिलता है -

"सेरा करो स्नान, शील संतोष शुचि प्यारो"।

सभी मनुष्यों को प्रातः काल स्नान करना चाहिए। ऐसा करने से रात्रि के समय के बुरे स्वप्न, शारीरिक मैल और हर तरह की गंदगी साफ हो जाती है जिसके कारण शारीरिक तेजस्विता, ओजस्विता, क्रांति आदि गुण उत्पन्न होते हैं।

गुरु जम्भेश्वर जी ने मनुष्य को पानी-ईंधन और दूध को छान-बीनकर के प्रयोग में लाने का आदेश दिया है। क्योंकि पानी में अनेक प्रकार के विषाणु पाये जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। दूध में भी कई प्रकार के कीट पतंगे गिर जाते हैं। यदि हम पानी और दूध को छानकर प्रयोग नहीं करेंगे तो ये विषाणु व कीट पतंगे मानव के शरीर में प्रवेश कर जाएंगे जिससे मानव का स्वास्थ्य खराब होगा दूसरे जीव हत्या का पाप भी उसे लगेगा।

"पाणी बाणी इंधनी, दूध, इतना लीजै छान"।

इसी प्रकार ईंधन को भी गुरु जाम्भोजी ने ठोक पीटकर प्रयोग में लाने को कहा है क्योंकि इसमें भी बहुत से कीट पतंगे पाये जाते हैं। अतः यदि हम बिना ठोक-पीट के ईंधन को जलाएंगे तो ये जलकर नष्ट हो जाएंगे जिसके कारण हमारा पर्यावरण अशुद्ध होगा। गुरु जी का पर्यावरणीय दृष्टि से यह नियम बहुत उपयोगी है।

मानव सदैव से ही अपने प्रति दया भाव का आकांक्षी रहा है। हर परिस्थितियों में वह चाहता है की दूसरे उस पर दया करें। परंतु उसे भी दूसरे प्राणियों के प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह अपने लिए चाहता है। इसलिए प्रत्येक मानव के इस नियम को याद करते हुए मूक व निरीह जीवों पर दया करनी चाहिए।

"जीव द्या पालनी, रुख लीला नहीं धोवै"।

ये मूक व निरीह जीव तो मनुष्य पर आश्रित हैं जिनकी सेवा करना मानव का परम धर्म है। जिस प्रकार एक गाय या बकरी प्रकृति का घास खाती है और दूध देती है, उस दूध से अमृत तुल्य खीर खाना तो सही है परंतु उनका गला काटना कहाँ तक न्याय संगत है। गुरु जाम्भोजी ने अपनी जम्भवाणी में कहा है की जीवों की रक्षा करनी चाहिए।

"जीवा ऊपरी ज़ोर करीजै, अतिकाल हुयसी भारी"।

गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी में पर्यावरण को धर्म से जोड़ा गया है। होम करना एक अति पवित्र सत्कर्म है। कोई भी शुभ कार्य करने से पहले होम करने की परंपरा है। यह परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है। जिसके उदाहरण हमें भारतीय धर्म ग्रन्थों -ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, उपनिषद, पुराणों आदि में मिल जाते हैं। मनुष्य के जन्म व मृत्यु सभी पर हवन किया जाता है। क्योंकि हवन करना शुद्धि का प्रतीक माना जाता है। हवन करने के कई लाभ हैं। जो सामग्री हवन में प्रयोग की जाती है उससे पर्यावरण शुद्ध होता है क्योंकि वायु में कई प्रकार के जहरीले विषाणु घूमते हैं जो हवन सामग्री के धुएँ से मर जाते हैं और हवन में डाले जाने वाले घी से वायुमंडल शुद्ध होता है। अतः हवन के धुएँ में इतनी शक्ति होती है की इसके द्वारा वायु, जल, ध्वनि, भूमि आदि सभी प्रकार के प्रदूषण दूर किए जा सकते हैं। गुरु जाम्भोजी के 29 धर्म नियमों में होम के नियम को भी महत्वपूर्ण माना गया है। गुरु जम्भेश्वर जी ने नित्य सुबह हवन करने का उपदेश दिया है। हवन मानव को स्वस्थ व सुखी जीवन तथा मरणोपरांत बैकुण्ठ में वास देता है।

जा दिन तेरे होम न जाए न तप न किरिया।

गुरु न चिंहू पंथ पायौ।

आज वैज्ञानिक प्रगति के कारण औद्योगीकरण की प्रक्रिया इतनी प्रबल हो गयी है जिससे वातावरण में संतुलन बनाना कठिन हो गया है। गुरु जम्भेश्वर जी ने आज से पांचसौ वर्ष पूर्व पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझ लिया था। उस समय तो पर्यावरण प्रदूषण की कोई समस्या ही नहीं थी। पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जानकर ही उन्होंने वृक्ष न काटने का नियम बनाया। उनके समस्त कार्यकलाप मानव जाति के कल्याणार्थ थे। गुरु जी का एक मात्र लक्ष्य मानव में एक ऐसी ज्ञान ज्योति को प्रकाशित करना था जिससे

मनुष्य स्वच्छ एवं सुरक्षित जीवन जी सके। उनके पर्यावरण संबंधित नियम सैद्धांतिक नहीं अपितु व्यावहारिक हैं। इन नियमों को विश्व की सरकारें अब मान रही हैं। आज विश्व में औद्योगिक विकास के कारण वनों का प्रतिशत दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है, वनों की सुरक्षा के लिए अनेक आंदोलन चलाये जा रहे हैं। भारत में चिपको आंदोलन इसी का एक उदाहरण है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व राजस्थान प्रांत के जोधपुर जिले के रैवासरी ग्राम में खेजड़ी वृक्षों की रक्षा हेतु 363 स्त्री-पुरुषों ने स्वेच्छा से गुरु जी के नियमों का पालन करते हुए सत्याग्रह स्वरूप अपने प्राणों की आहुति दी। गुरु जम्भेश्वर जी के परम शिष्य वील्होजी ने इस बात का उल्लेख जम्बवाणी में किया है।

"करमा खड़ी छै खेजड़िया काज, रैवासड़ी के चौहटे।

सम्मत सौलासो संसार, समय मझ और इकसटे "

सन्दर्भ -सूची

1. (सम्पा) कृष्णलाल बिश्रोई, वील्होजी की वाणी, पृ० 204
2. (सम्पा) कृष्णलाल बिश्रोई, वील्होजी की वाणी, पृ० 246
3. (सम्पा) कृष्णलाल बिश्रोई, वील्होजी की वाणी, पृ० 154
4. (सम्पा0) कृष्णानंद आचार्य, जम्भासागर, पृ० 36
5. (सम्पा) कृष्णलाल बिश्रोई, वील्होजी की वाणी, पृ० 174
6. (सम्पा) कृष्णलाल बिश्रोई, वील्होजी की वाणी, पृ० 169
7. डा० किशनाराम बिश्रोई, जम्बवाणी मूल संजीवनी व्याख्या, पृ० 27-29
8. स्वामी ब्रह्मानन्द जी, जम्भदेव चरित्र भानु, पृ० 208
9. (सम्पा) कृष्णानन्द आचार्य, जम्भासागर, पृ० 251
10. (सम्पा) कृष्णलाल बिश्रोई, वील्होजी की वाणी, पृ० 202